विमर्श प्रवाह
Vimarsh Pravah
An Open Access, Bi-Annual, Blind Peer Reviewed, E-Research Journal
Vol. - I, Issue - II, Jan–June 2025
ISSN: 3049-0065 (Online)

बैगा जनजाति में पारिस्थितिकीय और पर्यावरण बोध

श्रीमती रीता अनिल कुमार
शोधार्थी
एवं
डॉ. गौरी शर्मा
सहायक आचार्य
शिक्षा विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत - 442001
ई-मेल – 23gouri74@gmail.com

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य बैगा जनजाति के पारिस्थितिकीय और पर्यावरण बोध, पर्यावरण से समायोजन एवं पर्यावरण के प्रति उनकी सजगता का अध्ययन करना है। बैगा जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य में मुख्यतः बिलासपुर, मुंगेली, कोरिया, राजनाँदगाँव एवं कवर्धा जिले में निवास करती है। भारत सरकार ने बैगा जनजाति को इनकी विकास की धीमी गति को देखते हुए छत्तीसगढ़ राज्य की विशेष पिछड़ी जनजाति का दर्जा दिया है। प्रस्तुत शोध पत्र गुणात्मक नृजाति उपागम पर आधारित है एवं इसकी वर्णनात्मक प्रकृति को देखते हुए प्रदत्तों का संकलन सहभागी अवलोकन के माध्यम से किया गया है। अध्ययन हेतु बिलासपुर जिले के अंतर्गत कोटा विकासखण्ड के करका ग्राम के नकटाबांधा टोला में रह रहे बैगा समुदाय का चयन किया गया है। यहाँ बैगा समुदाय के कुल 62 परिवार रहते है। बैगा जनजाति जंगलों, पहाड़ों और दुर्गम स्थानों पर निवास करती है। बैगा जनजाति के लोग प्रकृति के विविध स्वरूपों सूर्य, चंद्रमा, भूमि, जल, अग्नि, वनस्पति, औषधि, अन्न, ग्राम, वृक्ष सभी में देवत्व का वास मानकर इनकी पूजा करते है। बैगा जनजाति को अपनी पारिस्थितिकी, कृषि और औषधीय ज्ञान के लिए पहचाना जाता है। इस समुदाय की विशेषता है कि जीवन यापन के लिए प्रकृति से जितना जरूरी हो उतना ही लेते है साथ ही पेड़, पौधों, जीव-जंतु और पशुओं के प्रति संवेदनशील होते है और उनका संरक्षण करते है। उनके प्रति कृतज्ञता का भाव इनमे होता है । आज तीव्र नगरीकरण, अति औद्योगिक एवं तकनीकी युग में पर्यावरण का विनाश हो रहा है, जिससे मानव

विमर्श प्रवाह
Vimarsh Pravah
An Open Access, Bi-Annual, Blind Peer Reviewed, E-Research Journal
Vol. - I, Issue - II, Jan–June 2025
ISSN: 3049-0065 (Online)

प्रजाति, जीव-जंतु, पेड़-पौधे विलुप्त होने की कगार पर है और हमें महाविनाश की ओर ले जा रहे है। ऐसे समय में जनजातीय समाज ही ऐसा समुदाय है, जो पर्यावरण के प्रति अति संवेदनशील है, उनकी परम्पराएं, विश्वास, मान्यताऐं, रीति रिवाज एवं विभिन्न त्योहारों से जुड़ी मान्यताऐं प्रकृति से जुड़ी है और उसके संरक्षण एवं संवर्धन हेतु प्रेरित करती है। अतः जनजातीय परंपरागत ज्ञान के अंतर्गत जनजातीय पारिस्थितिकीय एवं पर्यावरणीय पारंपरिक ज्ञान का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द - पारिस्थितिकी, पर्यावरण, पर्यावरण बोध, बैगा जनजाति, पारंपरिक ज्ञान।

परिचय

छत्तीसगढ़ राज्य एक जनजाति बाहुल्य राज्य है, यहाँ लगभग 42 प्रकार की विभिन्न जनजातियां निवास करती है। बैगा जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य की 5 विशेष पिछड़ी जनजातियों में से एक है। यह जनजाति अधिकांशत: बिलासपुर, मुंगेली, कोरिया, राजनंदगाँव और कवर्धा जिलों में निवास करती है। इनका निवास अधिकतर जंगलों, पहाड़ों और दुर्गम स्थानों पर दिखाई देता है। जीवनयापन के लिए यह मुख्य रूप से कृषि और वन संसाधनों पर निर्भर रहती है तथा इन्हें जंगलों और चिकित्सा के बारे व्यापक जानकारी होती है (आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, 2020)। बैगा जनजाति के लोग सूर्य, चंद्रमा, भूमि, जल, अग्नि, वनस्पति, औषधि, अन्न, ग्राम, वृक्ष सभी में देवत्व का वास मानकर इनकी पूजा करते है। महादेव को वे अपने प्रमुख देव के रूप में मानते है। किसी भी कार्य को करने से पहले वे महादेव का स्मरण कर अनुमति अवश्य लेते है। ठाकुर देव को वे प्रमुख ग्राम देवता एवं महामाई दाई को देवी के रूप में पूजते है। पूजा में बलि देने की प्रथा है। बैगा जनजाति अब तक अपनी संस्कृति को बचाए हुए है, लेकिन आज विकास के नाम पर उन्हें जंगलों से दूर किया जा रहा है, जिससे उनका पारंपरिक ज्ञान और संस्कृति विलुप्त होने की कगार पर है। भारत सरकार पारिस्थितिकीय और पर्यावरण संरक्षण पर करोड़ों खर्च कर रही है, किन्तु अधिवास का अधिकार अभी उन्हे प्राप्त नहीं है। उन्हे जंगल के सीमित अधिकार ही दिये गए है जिनका प्रयोग भी वे वन अधिकारियों के डर से नहीं करते है। वन विभाग द्वारा जंगलो की अंधा धुंध कटाई की जा रही है। औषधि वृक्ष समाप्त हो रहे है। फलस्वरूप पारिस्थितिकी और पर्यावरण दोनों खतरे में है। जनजाति

समुदाय की संस्कृति और उनकी पहचान बनी रहेगी तो वन संसाधनो का संरक्षण भी होगा और पारिस्थितिकी को नष्ट होने से बचाया जा सकेगा। पारिस्थितिकीय और पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए जनजातीय समाज की सहभागिता आवश्यक है।

साहित्य समीक्षा

बैगा जनजाति पर हुए शोधकार्यों से बैगा समुदाय के पारिस्थितिकीय ज्ञान और पर्यावरण के प्रति संवेदन शीलता के संबंध में जानकारी प्राप्त होती है।

रामबाबू एवं पांडा (2016) ने अपने शोध मे पाया कि बैगा जनजाति के लोग विशेष रूप से चिकित्सा के लिए पहचाने जाते है। ये लोग हस्तकला की वस्तुए बनाते है, अगर इन लोगों को उचित सहयोग दिया जाये तो देश की विकास प्रक्रिया में इनका महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है, एवं अपनी परम्परा और संस्कृति को भी बचाया जा सकता है। स्कंद मिश्रा (2017) ने बताया कि बांधवगढ़ के 34 कुलो के 67 पुष्पीय पौधों का औषधीय उपयोग संबंधी ज्ञान बैगा जनजाति को है। अधिकांशतः इन औषधियों का उपयोग सामान्य बीमारियों (जैसे दर्द, बुखार, घाव, सर्दी) के इलाज मे किया जाता है, लेकिन जटिल बीमारी में उपयोग होने वाली औषधीय पौधों की जानकारी कुछ ही बैगा को थी तथा इनमें से बहुत से पौधे ऐसे पाए गए जिनका अत्यधिक उपयोग होने के कारण उनके प्राकृतिक स्रोत धीरे-धीरे कम हो रहे है। अतः आवश्यक है कि इन क्षेत्रों में अधिक से अधिक औषधीय पौधो का रोपण किया जाए। सिंह (2018) ने शोध कार्य में पाया कि अब बैगा जनजाति का चिकित्सा के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन देखा गया है और अब बैगा जनजाति के लोग पारंपरिक चिकित्सा को ना अपनाकर आधुनिक चिकित्सा को अपनाने लगे है। साहू (2018) ने पाया कि बैगा जनजाति प्राकृतिक संसाधन पर निर्भर है और उनकी संस्कृति भी प्रकृति के अनुसार पाई जाती है, परंतु आज उनका विस्थापन किया जा रहा है, फलस्वरूप जल, जंगल, जमीन से दूर होने से उनका पारिस्थितिकीय ज्ञान खत्म होते जा रहा है। सेबेस्टियनस (2020) ने अपने शोध मे बताया कि बैगा जनजाति के ज्ञान हस्तांतरण में अनौपचारिक पारंपरिक प्रथाएं जैसे अनुष्ठान, पूजा पाठ, त्योहार, उत्सव, मछली पकड़ना, शिकार करना शामिल है, जिसमें बैगा पुरुष, महिलाएं, युवा और बच्चे भाग लेते है, यह सब अनौपचारिक रूप से ही होता है एवं इन अनौपचारिक रीती-रिवाजों को वे अपने से बड़ो से सीखते है।

इसी तरह आजीविका और पारिस्थितिकीय ज्ञान बुजर्गों के द्वारा अपनी अगली पीढ़ी को प्रथाओं के माध्यम से सांस्कृतिक ज्ञान के रूप मे सौंपा जाता है। त्यागी एवं दास (2020) ने पाया कि बैगा महिलाओं ने जंगल पर अपना अधिकार पाने के लिए संघर्ष किया और बैगा महिलाएं जंगल और पर्यावरण के प्रति अधिक सजग थी। भट्टाचार्य एवं पाल (2021) ने अपने शोध में जानकारी दी कि जनजातीय पारिस्थितिकी ज्ञान पारिस्थितिक संतुलन को बहाल करने और जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों का मुकाबला करने में बहुत उपयोगी है तथा पर्यावरण का यह ज्ञान मौखिक है, जो पर्यावरण अनुकूलन के साथ बदलता रहता है, परंतु अब जनजातियों की मूल्यवान संस्कृति लुप्त होती जा रही है। जनजातीय पारिस्थितिकीय ज्ञान पारिस्थितिकी संतुलन को बहाल करने में और जलवायु परिवर्तन से मुकाबला करने में उपयोगी हो सकता है। सलीम, अनुर, उमर महोम्मद एवं सानुसी (2023) ने पाया कि पारंपरिक ज्ञान ऐसे लोगों की जो विशेष रूप से जीवन हेतु प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है उनकी आजीविका में योगदान देकर जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने में मदद कर सकता है।

पारस्थितिकी - परिस्थितिकी जीव समुदायो के आपसी संबंध तथा जीव समुदाय और वातावरण के परस्पर संबंधो का अध्ययन है । अन्य शब्दो में परिस्थितिकी के अंतर्गत सजीव और निर्जीव पर्यावरण के मध्य परस्पर सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। वर्तमान समय में मानव अनेक समस्यों से घिरा हुआ है, जिसका कारण कहीं न कहीं पारिस्थितिकीय असंतुलन है। जिसके उत्थान के लिए पारिस्थितिकीय ज्ञान का होना आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है।

पर्यावरण बोध - पर्यावरण बोध से आशय पर्यावरण के प्रति जागरूकता और समझ से तथा पर्यावरण में उपस्थित जीव और अजीव के बीच संबंधो को समझने और उनका सम्मान करने से है। आदिकाल से मनुष्य और प्रकृति के मध्य अन्योनाश्रित संबंध रहा है किन्तु आज प्रकृतिक संसाधनो के अविवेकपूर्ण, अनियंत्रित, असीमित दोहन, अति औद्योगीकरण, रसायनो के अधिक प्रयोग ,परमाणु शक्तियों के अधिक प्रयोग से जल, वायु, भूमि, जीव जन्तु वनस्पति इत्यादि पर संकट उत्पन्न हो रहा है (शुक्ला , 2019)। मानव आधुनिकता की दौड़ में इतना अंधा हो गया है, कि वह अविष्कार के माध्यम से प्रकृति पर पूरी तरह विजय प्राप्त करना चाहता है, जिस कारण पर्यावरण का निरंतर हास हो रहा है। अतः पर्यावरण के प्रति सजगता एवं पर्यावरण संरक्षण बेहद आवश्यक है।

पारंपरिक ज्ञान - पारंपरिक ज्ञान वह ज्ञान है जिसमें जानकारी, कौशल और अभ्यास का समावेश होता है और एक समुदाय के भीतर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक विकसित और निरंतर पारित होता है तथा उनकी संस्कृति और पहचान का हिस्सा बन जाता है।

शोध उद्देश्य

1. बैगा जनजाति में पारिस्थितिकीय ज्ञान और पर्यावरण के प्रति सजगता का अध्ययन करना ।

शोध विधितंत्र – प्रस्तुत शोध एक गुणात्मक अनुसंधान है एवं नृजाति शोध उपागम पर आधारित है। शोध की प्रकृति वर्णनात्मक है। शोध हेतु सहभागी अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श के रूप में बिलासपुर जिले के कोटा ब्लॉक के अंतर्गत करका ग्राम में निवासरत बैगा समुदाय का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि से किया गया है। जहां बैगा समुदाय के 62 परिवार निवास करते है। शोधार्थी द्वारा स्वयं इस समुदाय के बीच में रहकर 06 माह का समय बिताया गया है एवं उनके बीच रहते हुए शोधार्थी ने सहभागी अवलोकन एवं अनौपचारिक बातचीत के माध्यम से प्रदत्तों का संकलन किया है। आंकड़ो के विश्लेषण हेतु विषय गत विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है।

व्याख्या एवं विश्लेषण

बैगा समुदाय के लोग पारिस्थिति के अनुकूल अपना जीवन जी रहे है। इस समुदाय में प्रचलित मान्यताऐं, विश्वास, परंपराएँ, संस्कार सभी कुछ पारिस्थितिकी के अनुकूल और स्थाई विकास की संकल्पना को साकार करने वाली दिखाई देती है। सदियों से बैगा लोग अपनी संस्कृति, रीती रिवाजों, और परम्पराओं के माध्यम से पर्यावरण को सुरक्षित करते आ रहे है। बैगा समुदाय के लोगो का अस्तित्व ही जंगल से जुडा हुआ प्रतीत होता है। इस समुदाय के लोगो में बचपन से ही औषधीय पौधों एवं अन्य वनस्पतियों की जानकारी होती है। पेड़ पौधों में नर और नारी की भी पहचान वे भलीभाँति कर लेते है। जंगल में उनके घर लकड़ी और मिट्टी से बने होते है जो पर्यावरण के अनुरूप होते है। बैगा समुदाय बड़े-बड़े पहाड़ों को नहीं काटते बल्कि वे पहाड़ों की ढलान पर ही अपना घर बना लेते है। बैगा अपने आपको भूमि का पुत्र कहते है (मंडला गजेटियर 1912 ; एल्विन 1939; सबेस्टियन 2020;)। वेदों में भी ऋषिगण पृथ्वी को अपनी माता मानते आए है-माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः

(अथर्ववेद 12 .1.12)। आज भी बैगा समाज को विशेष सुविधाओं की जरूरत नहीं होती है। जंगल से जो भी मिलता है उसी से अपना जीवन निर्वहन करते है। बैगा लोग धरती को अपनी माता मानते है और एक पुत्र की भांति उनकी गोद में बिना बिस्तर बिछाये सो जाते है। जंगल से उपलब्ध होने वाले अनाज, भाजी, कंद का उपयोग अपने भोजन के रूप में करते है। बैगा समुदाय के सामाजिक नियम भी पर्यावरण के अनुकूल होते है।

बेवर खेती – बैगा जनजाति पूर्ण रूप से पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण के प्रति सजग दिखाई देती है। बैगा समुदाय धरती को अपनी माता मानते है, इसलिए वे धरती पर हल नहीं चलाते है, उनका मानना है, कि इससे धरती माँ को कष्ट होंगा अतः वे बेवर खेती करते थे। जंगल के बीच जहाँ कही पर जगह खाली रहती है, वे बीज का छिड़काव कर देते है। उनका मानना है कि जिस प्रकार एक माँ किसी भी परिस्थिति में एक पुत्र का पेट भरती है, उसी प्रकार प्रकृति भी हमारा पेट भरती है। बेवर खेती में कम बारिश हो या अधिक दोनों ही स्थितियों में फसल अच्छी होती है, इस खेती में न बहुत ज्यादा पानी की जरूरत होती है न ही फसलों में कीड़ा लगता है, बिना किसी हानिकारक उर्वरकों के उपयोग के खेती की जाती है (नाग,1958 ; बिसेन एवं खान 2021)। इस तरह की खेती करके किसी भी जलवायु में फसल का उत्पादन किया जा सकता है। बैगा जनजाति के पास अनाजों के कई किस्म के बीज पाए जाते है, जैसे राहर, कोदो, उड़द, सिकिया इत्यादि। यह बीज अपनी नई पीढ़ी के लिए ख़त्म ना हो जाए इसलिए वे इसे बचाने के लिए औषधीय पौधे के बीज के संरक्षण के साथ-साथ अनाजों के बीज का संरक्षण भी करते है एवं अपनी संस्कृति और रीती-रिवाजों के द्वारा प्रकृति को धन्यवाद भी देते है। आज जंगलों में प्रवेश निषेध है शासन से जो जमीन कृषि हेतु उन्हे मिली है इस पर अब धान की फसल ही लेते है किन्तु आज भी वे हल अथवा ट्रेक्टर से स्वयं खेतों को कभी नहीं जोतते है उनकी मान्यताएँ उन्हे रोकती है। आज पुनःशासन बेवर कृषि को प्रोत्साहन दे रही है।

औषधीय ज्ञान - यह ज्ञान उन्हे उनके पूर्वजों द्वारा प्राप्त हुआ है, जिसे वे सदियों से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्रदान करते आ रहे है। बैगा समुदाय द्वारा बाल का झड़ना, पथरी, मलेरिया, कान दर्द, दांत दर्द, बुखार जैसे रोगों का भी इलाज किया जाता है। बुखार में पीपल के पेड़ की दातुन करते है, शरीर पर बड़ी चोट लगने से टांके लगाने कि आवश्यकता नहीं होती कुरकुट के पत्तों को पीसकर उसका लेप लगाते है जिससे घाव जल्दी ठीक हो जाता है। हड्डी टूटने पर हड्डी को जोड़ने के लिए हर्षनाडी के पौधे

विमर्श प्रवाह
Vimarsh Pravah
An Open Access, Bi-Annual, Blind Peer Reviewed, E-Research Journal
Vol. - I, Issue - II, Jan–June 2025
ISSN: 3049-0065 (Online)

का उपयोग किया जाता है। हर्षनाडी का पौधा, तुलसी, एलोवेरा का पौधा हर बैगा के घर के पास लगा होता है। कई प्रकार के औषधीय पौधें वे जंगल से लेकर आते है तथा कुछ पौधों को वे घर में लगाते है। बैगा समुदाय औषधीय पौधों को जंगल से लेने के पूर्व पौधों की नारियल अगरबत्ती और चांवल से पूजा करते है और उनसे अनुमति लेते है तथा अपने ईश्वर महादेव से प्राथर्ना करते है कि बीमार हुआ व्यक्ति इस औषधि से ठीक हो जाये और यह औषधि असर करे। बैगा जब भी जंगल से औषधीय पौधों को लेने जाते है उनका नियम है कि पौधों को जड़ से नहीं उखाड़ते उसका एक भाग छोड़ देते है जिससें कि पुनः औषधीय पौधा ऊग सके इस तरह वे पर्यावरण को हानि नहीं पहुंचाते है। शरीर की ताकत के लिए बैगा समुदाय के लोग भोजन में हरी पत्तेदार सब्जीयां, कंदमूल, कोदो कुटकी, चावल इत्यादि का उपयोग करते है। आजकल कोदो कुटकी की जगह शासन से प्राप्त चावल ने ले ली है जिसके कारण अनेक बीमारियाँ घर कर रहीं है ऐसा बैगा समुदाय के लोगों का मानना है। बैगा समुदाय जड़ी बूटियों से अपने पशुओं का इलाज भी करते है। गुडारी जड़ी से जानवरों के शरीर में लगने वाले कीड़ों का इलाज भी किया जाता है। इसके अलावा वे मछलियों को पकड़ने के लिए भी रसायनो की जगह जड़ी का उपयोग ही करते है।

पर्यावरण के प्रति सजगता

बैगा जनजाति सदियों से पर्यावरण के प्रति सजग है, यही कारण है कि बैगा जनजाति के जंगलों में रहते हुए भी जंगल अभी भी वीरान नहीं हुए है। बैगा जनजाति प्रकृति की पुजारी है, बैगा समाज के लोग पीपल, नीम, बरगद, डूमर, कटहल, जामुन, महुआ, तेंदू पेड़ को कभी नहीं काटते वे उन्हें संतान स्वरूप मानते है एवं उनकी रक्षा करते है। बैगा लोग जंगल को आग कभी नहीं लगाते है उनका मानना है कि भगवान ने जंगल में हमारे लिए अमृत बरसाया है (मंडला गजेटियर 1912)। अगर जंगल को क्षति पहुंचेगी तो हमारा संसार ही उजड़ जायेगा। उनके पारंपरिक रीति रिवाजों, विवाह में पेड़ों का विशेष महत्त्व देखने को मिलता है। विवाह में मंडप लगाने से लेकर विवाह के सभी कार्य में वृक्ष की पूजा समुदाय द्वारा की जाती है। पूजा में लगने वाली महुआ की लकड़ी के लिए वे महुआ वृक्ष को काटते नहीं है, उसकी टहनी को लाकर घर आंगन में पूजा कर लेते है। बैगा समुदाय वृक्ष को जड़ से नहीं काटते ताकि वृक्ष पुनः तैयार हो सके। इस समुदाय में यह प्रथा है कि आम और जामुन जैसे फलों के पेड़ों का विवाह वे अपने बच्चों से करते है। समाज के लोगों को भोज खिलाते है। वृक्ष के विवाह के

An Open Access, Bi-Annual, Blind Peer Reviewed, E-Research Journal
Vol. - I, Issue - II, Jan–June 2025
ISSN: 3049-0065 (Online)

पश्चात ही बैगा फलों को खा सकते है। उसी तरह फसलों के पूरी तरह से पक जाने के बाद फसल की पूजा की जाती है, उसके पश्चात ही बैगा लोग उसका सेवन करते है। बैगा लोगों का मानना है कि अगर कोई बैगा चोरी से बिना पूजा के कोई फल अथवा अनाज का सेवन करते है, तो उनके साथ अनहोनी होती है। देवता पकड़ लेंगे और उनका चेहरा फूल जाता है तथा बिना पेड़ पौधों की पूजा किये अगर पेड़ों को काटते है, तो जंगल का राजा शेर खा जायेगा। बैगा समुदाय में जलस्रोत कुएं की पूजा भी की जाती है और किसी भी नए कुए का विवाह भी बच्चों के साथ किया जाता है। कुएं के विवाह के पश्चात ही उसका पानी पिया जाता है।

जीव जन्तुओं / पशु पक्षियों का संरक्षण

बाघ को बैगा लोग अपना देवता मानते है तथा उसका शिकार कभी नहीं करते इसके अलावा वे अन्य जीव जैसे बन्दर, भालू, चीता, गहवर, लकडबग्घा आदि का शिकार भी कभी नहीं करते हैं। बल्कि उनका संरक्षण करते है। पालतू पशु पक्षियों के बीमार होने पर उनके लिए औषधीय पौधों को लाकर उसका उपचार भी करते है। बैगा समुदाय शहद निकालने के बाद मधुमक्खी के छत्ते को उसी स्थान पर रख देते है ताकि मधुमक्खी को पुनःछत्ता बनाना न पढ़े और वह फूलों का रस उसमें इक्कठा करके पुनःशहद का निर्माण कर सके। बैगा समुदाय में शहद प्रत्येक नौ साल में नौ कातिक के बाद जब मोहती/मोती का फूल खिलता है तब निकाला जाता है। इस दिन को वे रसनवाखाय के रूप में मनाते है। रसनहाखाय के दिन कोई बैगा पूजा के पहले मदिरा का सेवन नहीं करता है शहद निकलने के बाद सबसे पहले शहद लाकर नारियल, अगरबत्ती से ठाकुर देव की पूजा होती है फिर शहद को प्रसाद के रूप में सभी समुदाय के लोगों को दिया जाता है। इसी प्रकार की जानकारी अगस्त 2024 में बैगानी भाषा सम्मलेन में आये धर्मेन्द्र परे द्वाराअपने शोध पत्र वाचन के दौरान साझा भी की गई। बैगा समुदाय की मान्यता है कि रसनवाखाई के दिन बिना पूजा के शहद का सेवन करने से बाघ हमें खा जायेगा। बैगा समुदाय में हरेली के दिन पूर्वजों की पूजा की जाती है और पालतू पशु पक्षियों की सुरक्षा की कामना पूर्वजों से, देवी देवताओं से की जाती है।

बैगा समुदाय के लोग जीवन यापन हेतु तालाब एवं नदी से मछली पकड़ने के लिए बांस से बने विभिन्न प्रकार के उपकरणों एवं जालो का उपयोग करते है एवं रसायनों की जगह औषधीय

विमर्श प्रवाह
Vimarsh Pravah
An Open Access, Bi-Annual, Blind Peer Reviewed, E-Research Journal
Vol. - I, Issue - II, Jan–June 2025
ISSN: 3049-0065 (Online)

वनस्पति एवं जड़ी का उपयोग मछली को पकड़ने के लिए किया जाता है। जिससें नदी, सरोवर, एवं बांध का जल दूषित नहीं होता है और पर्यावरण सुरक्षित रहता है। बैगा लोग आज भी आधुनिक चीजों को महत्त्व नहीं देते है। गर्मी के मौसम में आज भी उनके घरों में पंखा, फ्रिज, कूलर नहीं है। पानी को ठंडा रखने के लिए जूट की बोरी से पानी की बोतल को लपेट करके रखते है और उस पानी का उपयोग पीने के लिए करते है। बैगा लोग आधुनिक चीजो का उपयोग न के बराबर करते है वे भलीभांति जानते है कि इनका उपयोग करने से उनके स्वास्थ्य और पर्यावरण को नुकसान पहुंचेगा।

बैगा जनजाति के सामाजिक नियम

बैगा जनजाति जंगलों को बचाने के लिए तीन नियमों का पालन करते है, जिसमें हरे भरे पेड़ों को न काटना, दूसरों को भी पेड़ काटने से रोकना और आग लगाना पूर्णतः प्रतिबंधित है।

बैगा जनजाति का मानना है कि जंगल में भगवान ने हमारे लिए अमृत बरसाया है। जंगलों से हमारी स्वास्थ्य से लेकर भोजन और आवास की हर जरूरत पूरी हो जाती है। बैगा समुदाय आज भी जंगल से मिलने वाले कंदमूल, फल, फूल, भाजी, जंगली मिर्च, धनिया इत्यादि भोज्य सामग्री का उपयोग करते है। वे वनों से ही अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेते है और हर परिस्थिति के लिए तैयार रहते है। आज भी वे नंगे पैर (पैरों में चप्पल न के बराबर पहनते है) जंगलों में कई किलोमीटर चलते है। उनकी मान्यता है कि चप्पल पहनकर चलने से धरती माता को कष्ट होगा।

निष्कर्ष

बैगा समुदाय में प्रचलित रीति रिवाज, मान्यताऐं, विश्वास, परम्पराएं उन्हे प्रकृति के साथ सहजीवी बनाती है। प्रकृति के विभिन्न रूपों पेड़ पौधों, जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, नदी, तालाब, जल, भूमि सभी के प्रति संवेदनशीलता उन्हे अपनी परम्पराओ से सीखने को मिलती है। प्रकृति के साथ उनके संबंधों को देखने से प्रतीत होता है कि ये सभी परिवार के सदस्य है कोई माता है, कोई पिता और कोई संतान स्वरूप है। वे प्रकृति के साथ इस प्रकार एकाकार है कि उसके नुकसान के बारे में सोच भी नहीं सकते।

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि बैगा जनजाति की संस्कृति और परम्पराएँ, मान्यताएँ प्रकृति के अनुकूल है, यह जनजाति प्राचीन काल से ही अपनी संस्कृति परम्पराओं और रीतिरिवाजो के माध्यम से पर्यावरण का संरक्षण और संवर्धन करते आ रही है और इस परंपरागत ज्ञान को कथा, कहानियों के माध्यम से अपनी नई पीढ़ी को सौंपती भी आ रही है । यह जनजाति समुदाय प्रकृति के विभिन्न प्रतीको में देवताओं का वास मानता है और उन्हे पूजता है। इस प्रकार वह प्रकृति के अत्यंत समीप रहकर मानव और पर्यावरण के परस्पर सहजीवी संबंध को समझता है। बैगा जनजाति का पारिस्थितिकीय ज्ञान प्राकृतिक संसाधनों और जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने में महत्त्वपूर्ण है तथा इसे सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए नियोजित प्रक्रिया में शामिल किया जाना चाहिए (भट्टाचार्य,2021)।

बदलते परिवेश में जहाँ जलवायु परिवर्तन विक्राल रूप लिए पर्यावरण और पूरे विश्व के मानव समाज के लिए बड़ी समस्या बनकर सामने खड़ा है। ऐसे में जनजातीय समाज के पारिस्थितिकीय ज्ञान को अनदेखा नहीं किया जा सकता । हमें अपनी परम्पराओं से सीख लेकर उसे अपनाना होंगा प्रकृति और मानव के सहजीवी सम्बन्धों को समझना होगा तभी पर्यावरण का संतुलन बनाया जा सकता है। जनजाति समुदाय का आस्तित्त्व जल, जंगल, जमीन से जुड़ा है और वह प्रकृति के समीप में रहते हुए पारस्परिक संबंध को भालिभांति समझते है, परंतु उन्हें विकास के नाम पर जंगलों से दूर कर उनकी संस्कृति से उन्हे दूर किया जा रहा है। परिणामस्वरूप आज वह अपना ज्ञान भूलते जा रहे है, अगर पारिस्थितिकीय ज्ञान और पर्यावरण को बचाना है, तो जनजातियों की संस्कृति को विलुप्त होने से बचाना होंगा। बैगा जनजाति के शैक्षिक सामाजिक और आर्थिक जीवन स्तर को उनके परंपरागत पारिस्थिकीय औषधीय और कृषि ज्ञान के माध्यम से बेहतर बनाया जा सकता है जिससें उनकी शैक्षिक और सामाजिक स्थिति में भी आवश्यक सुधार होगा एवं वे स्वयं के ज्ञान के प्रति गौरव का अनुभव कर सकेगे तथा समाज के हित मे इस ज्ञान का उपयोग किया जा सकेगा। हमारे जीवन का आधार ही प्रकृति के पाँच तत्व जल, वायु, भूमि, अग्नि और आकाश है अतः इनकी शुचिता को बनाए रखना हमारा परम दायित्व है और यह सीख हमें जनजाति समुदाय की विभिन्न परंपराओं से मिलती है।

सन्दर्भ सूची:

1. Babu, R., & Panda, A.N. (2016). Socio-economic status of the Baiga tribes of Chhattisgarh in India. International Journal of Multidisciplinary Research and Development, 10(03),181- 186.
2. Bhattacharya, S., & Pal, S. (2021). Creating Knowledge pool of Tribal Eco-culture: An instrument for ecological restoration. SGS - Engineering & Sciences, 1(01). Retrieved from https://spast.org/techrep/article/view/354
3. Mohammed Salim, J., Anuar, Umar, K., Tengku, Mohammed, & Sanusi, A. N. (2023). Impacts of traditional ecological knowledge of indigenous peoples: a systematic literature review. Sustainability, 15(1), 824
4. Naag, D. S. (1958) Tribal economy: An economic study of the Baiga, Bhartiya aadimjati sevak sangh, Delhi
5. Sebastian, L. (2020). Indigenous knowledge and practices of the Baiga tribe in relation to economy and ecology. An International bi-lingual peer-reviewed research journal. 10(38),167-174.
6. Tyagi, Niharika & Das, Smriti. (2020). Standing up for forest: A case study on Baiga women's mobilization in community governed forests in Central India. Ecological Economics. 178. 106812. 10.1016/j.ecolecon.2020.106812. https://www.researchgate.net/publication/343669374_Standing_up_for_forest_A_case_study_on_Baiga_women's_mobilization_in_community_governed_forests_in_Central_India
7. Bisen, K., and Khan, G. (2021) The Agricultural Practices of Bagha Janjati (Bevar)", JASRAE, 18, (1), 474–476,
8. बैगा विशेष पिछड़ी जनजाति का आधारभूत सर्वेक्षण प्रतिवेदन (2020) आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् नवां रायपुर, छत्तीसगढ़.
9. मध्य प्रांत जिला गजेटियर, मंडला गजेटियर, (1912) वॉल्यूम ए डिस्क्रिप्टिव, टाइम्स प्रेस बॉम्बे, पृष्ठ 69-76
10. मिश्रा, एस. (2017). मध्यप्रदेश की बैगा जनजाति द्वारा उपयोगी महत्वपूर्ण औषधीय वनस्पतियों का संरक्षण: बांधवगढ़ के संदर्भ में. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांसेज इन सोशल साइंसेज. 5(3), 145-147.
11. शुक्ला, आर. (2019). पर्यावरण संरक्षण -एक दार्शनिक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च इन साइन्स एंड टेक्नालजी IJSRST ,6(2) https://ijsrst.com/paper/5332.pdf

12. साहू, आर. (2018). टाइगर रिजर्व क्षेत्र के बैगा जनजाति में विस्थापन का प्रभाव. शोध प्रबंध. नृविज्ञान विभाग, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र.
13. सिंह, ए. (2018). बैगा जनजाति में प्रचलित चिकित्सा पध्दति. इन्टरनेशनल जरनल ऑफ़ क्रेटिव रिसर्च थॉट्स, 6(2), 679 -687.
14. पारे, धर्मेन्द्र (2024, अगस्त 23-24). बैगानी लोक साहित्य(अध्यक्षता) बैगानी भाषा सम्मलेन, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर